बी.एस.ओ.ई.-141 : नगरीय समाजशास्त्र
अध्यापक जाँच सत्रीय कार्य

कार्यक्रम कोड : **BASOH**
पाठ्यक्रम कोडः **BSOE-141**
सत्रीय कार्य कोड : **बी.एस.ओ.ई. -141 /ए.एस.एस.टी./TMA/2026-27**
अधिकतम अंकः **100**

नोटः यह सत्रीय कार्य तीन भागों में विभाजित हैं।

सत्रीय कार्य – I

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 500 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 20 अंकों का है।

1. नगरीय समाजशास्त्र की परिभाषा दीजिए। इसकी प्रकृति, क्षेत्र तथा नगरीय समाजशास्त्र के उद्भव एवं विकास में शिकागो स्कूल के योगदान की विवेचना कीजिए। 20

2. नगरीय क्षेत्र के प्रमुख उपागमों का समालोचनात्मक परीक्षण कीजिए। नगरों के अध्ययन में पारिस्थितिक-क्षेत्रीय तथा राजनीतिक अर्थव्यवस्था उपागमों की चर्चा कीजिए। 20

सत्रीय कार्य – II

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 250 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 10 अंकों का ळें

3. नगरीय समाजों में प्रवासन के प्रमुख प्रकारों, कारणों तथा परिणामों की चर्चा कीजिए। 10

4. पड़ोस की अवधारणा की व्याख्या कीजिए। समकालीन नगरों में पड़ोस तथा गेटेड समुदायों की विशेषताओं की चर्चा कीजिए। 10

5. नगरों को समझने में सांस्कृतिक राजनीति से संबंधित प्रमुख विमर्शों का परीक्षण कीजिए। 10

सत्रीय कार्य – III

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लगभग 100 शब्दों में दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंकों का है।

6. नगरवाद 06

7. बर्गेस का संकेंद्रीय क्षेत्र सिद्धांत 06

8. नगरीय समाजशास्त्र में नेटवर्क 06

9. भारत में मलिन बस्तियाँ 06

10. उपभोक्ता संस्कृति और कार्यनिवृत्ति 06

1. नगरीय समाजशास्त्र की परिभाषा दीजिए। इसकी प्रकृति, क्षेत्र तथा नगरीय समाजशास्त्र के उद्भव एवं विकास में शिकागो स्कूल के योगदान की विवेचना कीजिए। (20 अंक)

उत्तर

नगरीय समाजशास्त्र समाजशास्त्र की वह विशेष शाखा है जो नगरों में रहने वाले व्यक्तियों और समूहों के सामाजिक संबंधों, संस्थाओं, जीवन-पद्धति, असमानताओं तथा परिवर्तनों का व्यवस्थित अध्ययन करती है। इसका सरोकार केवल इमारतों, जनसंख्या और सड़कों से नहीं, बल्कि उनसे जुड़ी सामाजिक प्रक्रियाओं से है। गाँव से नगर की ओर गमन, रोजगार के नए अवसर, सामाजिक गतिशीलता, आवास, राजनीतिक भागीदारी और सांस्कृतिक विविधता इसी अध्ययन के अंग हैं।

प्रकृति और विशेषताएँ

अनुभवजन्य तथा वैज्ञानिक विषय: नगरीय समाजशास्त्री सर्वेक्षण, जनगणना, साक्षात्कार, सहभागी अवलोकन और ऐतिहासिक दस्तावेजों से तथ्य जुटाकर निष्कर्ष निकालते हैं। केवल नगर की प्रशंसा या आलोचना करना इसका उद्देश्य नहीं होता।

अंतर्विषयक दृष्टिकोण: नगर की भूमि, अर्थव्यवस्था, जनसंख्या तथा प्रशासन पर भूगोल, अर्थशास्त्र, मानवशास्त्र, जनांकिकी, राजनीति विज्ञान और नगर नियोजन से संवाद करना आवश्यक है।

गतिशील एवं तुलनात्मक प्रकृति: औद्योगिक नगर, व्यापारिक नगर, महानगर और छोटे कस्बे एक समान नहीं होते। अलग-अलग काल तथा क्षेत्रों में नगरीय जीवन के रूप और समस्याएँ बदलती रहती हैं।

सूक्ष्म एवं व्यापक स्तर: एक ओर परिवार, पड़ोस, मित्र-समूह और कार्यस्थल के संबंधों का अध्ययन होता है; दूसरी ओर राज्य की नीति, पूँजी निवेश, वर्ग-संघर्ष, वैश्वीकरण और महानगरीय विस्तार का परीक्षण होता है।